

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये द्वितीयं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्रीमन्नारायणीये द्वितीयं दशकम् ॥

भगरद्रपरर्णनम्

सूर्यस्पर्धिकिरीटमूर्ध्वतिलकप्रोद्धासिफालान्तरं
कारुण्याकुलनेत्रमार्द्रहसितोल्लासं सुनासापुटम्।
गणोद्यन्मकराडकुण्डलयुगं कर्णोज्ज्वलकौस्तुभं
रुद्रपङ्कजं रत्नमाल्यहारपटलश्रीरत्नसदीपं भजे ॥ 2.1 ॥

केयूराङ्गदकङ्कणोत्तममहारत्नाङ्गुलीयाङ्कित -
श्रीमद्वाहचतुष्कसङ्गतगदाशङ्खारिपङ्केरुहाम्।
काङ्किं काङ्कनकाङ्किलाङ्कितलसंपीताम्बरालम्बिनी -
मालम्बे रिमलाम्बुजद्व्युतिपदां मूर्तिं तरार्तिच्छिदम् ॥ 2.2 ॥

यत्त्रैलोक्यमहीयसोऽपि महितं सम्मोहनं मोहनां
कान्तं कान्तिनिधानतोऽपि मधुरं माधुर्यधुर्यादपि।
सौन्दर्योत्तरतोऽपि सुन्दरतरं रुद्रपमाश्चर्यतो -
हृष्याश्चर्यं भुरने न कस्य कुतुकं पुष्पाति रिषेण रिभो ॥ 2.3 ॥

तताद्भ्रुधुरात्कं तरं रपुंससम्प्राप्य सम्पन्नयी
सा देवी परमोत्सुका चिरतरं नास्ते स्वभक्तेश्वरपि।
तेनास्या वत कष्टमच्युत रिभो रुद्रपमानोज्ज्वल -
प्रेमस्वैर्यमयादचापलबलाच्चापल्यरार्तोदभुं ॥ 2.4 ॥

लम्बिस्तारकरामणीयकहृतेरेयं परेश्वरस्थिरे -
त्यस्मिन्नन्यदपि प्रमाणमधुना रक्ष्यामि लम्बिपते।

যে ৎরদ্ব্যানগুণানুকীৰ্তনরসাসক্তা হি ভক্তা জনা -
স্তেষ্ৰেষা রসতি স্থিরৈর দযিতপ্রস্তারদত্তাদরা ॥ 2.5 ॥

এরন্তুতমনোজ্ঞতানরসুধানিষ্যন্দসন্দোহনং
ৎরদ্রপং পরচিদ্রসাযনমযং চেতোহরং শৃৎরতাম্।
সদ্যঃ প্রেরযতে মতিং মদযতে রোমাঞ্চযত্যঙ্গকং
র্যাসিঞ্চত্যপি শীতবাষ্পরিসরৈরানন্দমূর্ছোদ্রৈঃ ॥ 2.6 ॥

এরন্তুততযা হি ভক্ত্যভিহিতো যোগঃ স যোগদ্রযাৎ
কর্মজ্ঞানমযাদ্ভূশোভমতরো যোগীশ্বরৈর্গীযতে।
সৌন্দর্যৈকরসাত্মকে ৎরযি খলু প্রেমপ্রকর্ষাত্মিকা
ভক্তির্নিশ্রমের রিশ্বরপুরুষৈর্লভ্যা রমারল্লভ ॥ 2.7 ॥

নিষ্কামং নিযতস্বধর্মচরণং যৎ কর্মযোগাভিধং
তদুরেত্যফলং যদৌপনিষদজ্ঞানোপলভ্যং পুনঃ।
তত্ত্বর্যজ্ঞতযা সুদুর্গমতরং চিত্তস্য তস্মাদ্বিভো
ৎরৎপ্রেমাত্মকভক্তিরের সততং স্বাদীযসী শ্রেযসী ॥ 2.8 ॥

অত্যাযাসকরাণি কর্মপটলান্যাচর্য নির্যন্মলা
বোধে ভক্তিপথেহথরাহপ্যুচিততামাযান্তি কিং তারতা।
ক্লিষ্টরা তর্কপথে পরং তর রপূর্ব্রমাখ্যমন্যে পুন -
শ্চিত্তাৰ্দ্ৰৎরমৃতে রিচিন্ত্য বহুভিঃ সিধ্যন্তি জন্মান্তরৈঃ ॥ 2.9 ॥

ৎরন্তুক্তিস্ত কথারসামৃতঝরীনির্মজ্জনেন স্বযং
সিদ্ধ্যন্তী রিমলপ্রবোধপদরীমক্লেশতস্তন্বরতী।
সদ্যঃ সিদ্ধিকরী জযত্যযি রিভো সৈরাস্ত মে ৎরৎপদ -
প্রেমপ্রৌটিরসার্দ্রতা দ্রুততরং রাতালযাধীশ্বর ॥ 2.10 ॥

॥ ইতি শ্রীমন্নारायणीये द्वितीयं दशकं समाप्तम् ॥